श्री तारतम वाणी

मेहेर सागर

नित्य पाठ

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत ।

लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ।।१।।

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग ।

इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग ।।२।।

पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।

हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ।।३।।

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।

जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ।।४।।

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।

जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर ।।५।।

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर ।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर ।।६।।
मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें ।
आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें ।।७।।
मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ।।८।।
दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत ।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत ।।९।।
सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ।।१०।।
इन दुख जिमी में बैठ के, मेहेरें देखें दुख दूर ।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर ।।११।।

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित ।

इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ।।१२।।

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।

मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक ।।१३।।

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद ।

गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद ।।१४।।

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र ।

सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ।।१५।।

बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।

रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन ।।१६।।

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।

रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिए मेहेर रस इस्क इलम ।।१७।।

जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर ।

सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर ।।१८।।

ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत ।

सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ।।१९।।

बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत ।

तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ।।२०।।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।

ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत ।।२१।।

ए मेहेर करत सब जाहेर, सबका मता तोलत ।

जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ।।२२।।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल ।

जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ।।२३।।

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।

जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ।।२४।।

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब ।

निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहां कहूं अब ।।२५।।

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।

मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ।।२६।।

बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।

अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर ।।२७।।

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।

मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम ।।२८।।

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।

मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम ।।२९।।

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।

मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक ।।३०।।

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन ।

मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन ।।३१।।

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।

कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ।।३२।।

दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।

मेहेरें दई हिकमत, करी मेहेरें जाहेर हकीकत ।।३३।।

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत ।

मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ।।३४।।

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत ।

दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ।।३५।।

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम ।

मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम ।।३६।।

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।

मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार ।।३७।।

जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।

मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ।।३८।।

मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।

हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर ।।३९।।

बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार ।

सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ।।४०।।

जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।

अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए ।।४१।।

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।

जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान ।।४२।।

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।

ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब ।।४३।।

ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।

ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ।।४४।।

महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर ।

सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर ।।४५।।